

---

.. li NgAShTakaM ..

॥ लिङ्गाष्टकं ॥

---

॥ ॐ लिङ्गाष्टकम् ॥

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गम् निर्मलभासितशोभितलिङ्गम् ।  
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गम् तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ १ ॥  
देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गम् कामदहम् करुणाकर लिङ्गम् ।  
रावणदर्पविनाशनलिङ्गम् तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥ २ ॥  
सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गम् बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम् ।  
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गम् तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥ ३ ॥  
कनकमहामणिभूषितलिङ्गम् फनिपतिवेष्टित शोभित लिङ्गम् ।  
दक्षसुयज्ञ विनाशन लिङ्गम् तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥ ४ ॥  
कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गम् पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम् ।  
सञ्चितपापविनाशनलिङ्गम् तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥ ५ ॥  
देवगणार्चित सेवितलिङ्गम् भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम् ।  
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गम् तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥ ६ ॥  
अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गम् सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम् ।  
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गम् तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥ ७ ॥  
सुरगुरुसुरवरपूजित लिङ्गम् सुरवनपुष्प सदाचित लिङ्गम् ।  
परात्परं परमात्मक लिङ्गम् तत् प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥ ८ ॥  
लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ ।  
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

॥ ॐ तत् सत् ॥

---

Encoded and proofread by Srinivas Sunder sunder at crystal.cirrus.com

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)  
Last updated November 19, 2010  
<http://sanskritdocuments.org>